بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-21.04.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में तक़्वा (ईशप्रायणता, संयम) की व्याख्या तथा उसको प्राप्ति का सचेत निर्देश।

जुम्अः के दिन में ऐसी मुबारक घड़ी आती है कि उसमें जो दुआ मांगी जाए वह स्वीकार होती है।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 21 अप्रैल 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- रमज़ान बीत गया और अनेक ऐसे लोग होंगे जिन्होंने रमज़ान में इबादत तथा अपने अन्दर विशेष बदलाव पैदा करने की योजनाएँ बनाई होंगी किन्तु उनके अनुसार अमल नहीं कर सके, जिस प्रकार सोचा था, कई लोग इस तरह पत्र लिखते हैं मुझे।

फ़रमाया- जुम्अः का दिन वह बरकत वाला दिन है जिसमें ऐसी घड़ी आती है जब दुआ की क़बूलियत का विशेष समय होता है अतएव यदि हमारे रमज़ान के दिन इस तरह नहीं भी गुज़रे जिस तरह हमारी इच्छा थी अथवा जिस प्रकार एक मोमिन के बीतने चाहिएँ थे तो फिर भी हमें आज यह संकल्प करना चाहिए तथा दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी दुर्बलताओं को अनदेखा करते हुए हम पर अपनी रहमत फ़रमाते हुए हमें सामर्थ्य दे कि हम अपने जीवन को निरन्तर इस मार्ग पर चलाने वाले बन जाएँ जो अल्लाह तआला हमसे चाहता है। अल्लाह तआला तो बड़ा दयावान है, उसने हमारी दुआओं को स्वीकार करने के लिए यह नहीं फ़रमाया कि रमज़ान के महीने में जुम्अः के दिन ऐसी घड़ी आती है जिसमें दुआएँ क़बूल होती हैं बल्कि जुम्अः की स्थाई विशेषता यह बयान फ़रमाई है।

अतएव यदि हम अपनी दुआओं में यह संकल्प करें कि हम इस रमज़ान के बाद भी अपने तक़्वा के स्तर को बढ़ाते रहेंगे, इसके लिए कोशिश करेंगे, अल्लाह तआला की निकटता को प्राप्त करने का प्रयास करते रहेंगे, आने वाले जुम्अः तक अपनी इबादतों को अल्लाह तआला के लिए शुद्ध करते रहेंगे,

फिर हर जुम्अः के मध्य वाली अवधि को अपनी इबादतों तथा नेक कर्मों के द्वारा सजाने का प्रयत्न करते रहेंगे, दुनिया को दीन पर प्रमुख रखेंगे, अगले रमज़ान तक हम इस प्रोग्राम को पूरा करने की कोशिश करते रहेंगे जो हमने अपने अन्दर पवित्र बदलाव पैदा करने के लिए रमज़ान के महीने में बनाया था तथा किसी कारणवश इसके अनुसार कर्म नहीं कर सके तो यह वह अमल है जो वास्तविक तक़्वा पैदा करता है और जब हम शुद्ध होकर अपनी इबादतें तथा अपने कर्म अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए पूरा कर रहे होंगे तो फिर अल्लाह तआला जो सब दयावानों से अधिक दयावान है, दयालु एवं कृपालु है वह हमें ये बरकतें प्रदान करता रहेगा जिन पर हमने इस रमज़ान में भी एक सीमा तक अमल किया।

अतः मूल बात तक़्वा है, मूलतः निरन्तर शुद्ध धारणा के द्वारा ख़ुदा तआला के आदेशों का पालन है। मूलतः ख़ुदा तआला का भय तथा उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करना है। यदि यह है तथा हम वापस इस सांसारिक जीवन में नहीं चले गए जहाँ दीन के दुनिया पर प्रधान होने को हम भूल जाएँ तो जो भी जैसी भी हमने इबादतें तथा अपने सुधार के प्रयास इस रमज़ान में किए हैं अल्लाह तआला इन्हें क़बूल फ़रमाते हुए हमें इसके फल प्रदान करता रहेगा।

अतः यह मूल सिद्धांत है जो हमें हर समय अपने सम्मुख रखना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति हर अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए और जब हम स्वयं अपने जीवनों को तक़्वा पर चलाने तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने के लिए व्यतीत कर रहे होंगे तो हम अपने बच्चों तथा अपनी नस्लों के सामने भी वे नमूने पेश कर रहे होंगे जिसके द्वारा नेकियों की जाग एक नस्ल से दूसरी नस्ल को लगती चली जाती है।

तक़्वा ही वह उद्देश्य है जिस पर हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने बहुत ज़ोर दिया है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अल. तो भेजे ही इस लिए गए हैं ताकि हमारे तक़्वा के स्तर ऊँचे हों। एक अवसर पर आप अलै. ने फ़रमाया- मैं भेजा गया हूँ ता सच्चाई तथा ईमान का ज़माना फिर आवे तथा दिलों में तक़्वा पैदा हो, सो यही कर्म मेरे अस्तित्व के आने के आने के मूल कारण हैं। अतः आप अलै. का ज़माना जो ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्वह (नबुव्वत के मार्ग पर चलने वाली ख़िलाफ़त) पर क़ायम होते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणियों के अनुसार क़यामत तक जारी रहने वाला ज़माना है, इसमें आप अलै. के मानने वाले ही हैं जिन्होंने सत्य पर स्थापित रहते हुए अपनी इबादतों के उच्च स्तर क़ायम करने हैं तथा यह लक्ष्य केवल एक महीने की इबादतों अथवा नेकियों की कोशिश से तो प्राप्त नहीं हो सकता। यदि हम अपनी इबादतों पर स्थिरता धारण करते हुए स्थापित हो जाएँ तो यही वे लोग हैं जिनके विषय में अल्लाह तआला ने आप अलै. को फ़रमाया कि मैं तेरे साथ तथा तेरे प्यारों के साथ हूँ। अतः यदि हम इस रंग में अपने जीवन व्यतीत कर रहे होंगे तो हम अपने कर्मों से दुनिया को यह सन्देश दे रहे होंगे कि यदि तुम अल्लाह तआला से सजीव सम्बंध स्थापित करना चाहते हो तो आओ! और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सच्चे ग़ुलाम को स्वीकर करो।

वास्तविक तक़्वा क्या है तथा उसके अनुसार चलने वाला कैसा होता है और उसके साथ अल्लाह तआला का क्या व्यवहार हुआ करता है इसके सम्बंध में हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि

वास्तविक तक़्वा के साथ मूर्खता जमा नहीं हो सकती। वास्तविक तक़्वा अपने अन्दर एक नूर रखता है, जैसा कि अल्लाह जल्ले शानुह फ़रमाता है कि ऐ ईमान वालो! यदि तुम मुत्तक़ी होने पर दृढ़ संकल्प रहो तथा अल्लाह तआला के लिए तक़्वा दृढ़ संकल्पता एवं स्थिरता धारण करो तो ख़ुदा तआला तुममें तथा तुमसे दूसरे में अन्तर रख देगा, वह अन्तर यह है कि तुम्हें एक नूर दिया जाएगा, वह नूर तुम्हारे कथनों, कर्मों एवं शक्तियों तथा चेतना में आ जाएगा। तुम्हारी बुद्धि में नूर होगा तथा तुम्हारी अनुमान वाली बात में भी नूर होगा और तुम्हारी आँखों में भी नूर होगा और तुम्हारे कानों तथा तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे वक्तव्यों तथा तुम्हारी प्रत्येक क्रिया एवं विश्राम में नूर होगा। अतः यह वह स्तर है जो एक मुत्तक़ी तथा मोमिन को प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। रमज़ान बीत गया तो भी हम इस स्तर को पाने की कोशिश कर सकते हैं। भाग्य शाली होंगे हममें से वे लोग जो इस स्तर को प्राप्त करे लें।

हमें याद रखना चाहिए कि यह ज़माना विशेषतः शैतान के हमलों का ज़माना है तथा वह अपने समस्त बहानों एवं चालों तथा हथियारों से हमले कर रहा है ऐसे में हमें ख़ुदा तआला की ओर पहले से अधिक झुकने की आवश्यकता है। टी वी हो, सोशल मीडिया हो अथवा अन्य प्रोग्राम, बच्चों के स्कूल अथवा उनके प्रोग्राम, हर जगह शैतान ने दज्जाल के द्वारा ऐसा जाल बुन दिया है कि जिससे अल्लाह के फ़ज़्ल के बिना बचना असम्भव है। इस समय सर्वाधिक चिंता तो हमें बच्चों को शैतान के हमलों से बचाने की है। इसके लिए माता पिता तथा जमाअती निज़ाम को भी कोशिश करनी चाहिए। इस उद्देश्य क लिए हर एक व्यस्क बुद्धि रखने वाले अहमदी को तक़्वा के उच्चतम स्तर प्राप्त करने होंगे, तब ही हम अपनी नस्लों को शैतान के इन हमलों से बचा सकेंगे। रमज़ान के बाद हमें आराम से बैठ नहीं जाना चाहिए बल्कि अपने क़ुर्आन के ज्ञान तथा दीन के ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- यह सच है कि वह मेरे मानने वालों को क़यामत तक मेरे इंकार करने वालों तथा विरोधियों पर ग़ल्बः देगा परन्तु विचारणीय बात यह है कि मानने वालों में हर एक व्यक्ति केवल मेरे हाथ पर बैअत करने से दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वह अपने अन्दर आज्ञा पालन का पूरा पूरा प्रभाव पैदा नहीं करता। फ़रमाया- स्पष्ट रहे कि केवल ज़बान से बैअत को स्वीकार कर लेना कोई चीज़ नहीं जब तक दिल का सुदृढ़ निश्चय तथा दुआ से इस पर पूरा अमल न हो। अतः जो व्यक्ति मेरी शिक्षाओं पर पूरा पूरा अमल करता है वह उस मेरे घर में दाख़िल होता है जिसके बारे में ख़ुदा तआला के कलाम में यह वादा है कि اِنِّیۡ اُحَافِظُ کُلَّ مَنۡ فِی الدَّار अर्थात हर एक जो तेरी चारदीवारी के अन्दर है उसे मैं बचाउंगा।

हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं कि यह तो तुम जानते ही हो कि शैतान लाहौल से भागता है किन्तु वह ऐसा सज्जन नहीं है कि केवल ज़बानी रूप से लाहाल कहने पर भाग जाए, असल बात यह है कि जिसके कण कण में लाहौल प्रवाहित हो जाता है तथा जो हर समय ख़ुदा तआला से ही सहायता एवं मदद मांगते रहते हैं तथा उससे से लाभान्वित होते रहते हैं वे शैतान से बचाए जाते हैं।

एक अवसर पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि दुआ में चुम्बकीय प्रभाव होता है वह फ़ैज़ एवं कृपा को अपनी ओर खींचती है। जब इंसान अल्लाह की किताब को प्रधानता नहीं देता तथा उसी के अनुसार

कर्म नहीं करता तब तक उसकी नमाज़ें केवल समय को नष्ट करना है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि एक हदीस में आया है कि नमाज़ इबादत का मग़्ज़ (गिरी, तत्व, सार) है अतः जब हम इस सार को प्राप्त करने की चेष्टा करेंगे तो नमाज़ का भी तथा अन्य इबादतों का भी हक़ अदा करने वाले बनेंगे, अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने वाले बनेंगे, अन्यथा ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) नमाज़ें तो कोई लाभ नहीं देतीं, असंख्य नमाज़ी हैं जो मस्जिदों में जाकर नमाज़ें पढ़ कर फिर अत्याचार एवं अन्याय की सीमा पार किए हुए हैं।

हमारी नमाज़ें किस तरह की होनी चाहिएँ, इस हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि याद रखना चाहिए कि नमाज़ ही वह चीज़ है जिससे सारी कठिनाईयाँ सरल हो जाती हैं तथा सारी बलाएँ दूर हो जाती हैं परन्तु नमाज़ का अभिप्रायः वह नमाज़ नहीं जो साधारण लोग प्रथा के रूप में पढ़ते हैं बल्कि अभिप्रायः वह नमाज़ है जिससे इंसान का दिल विनम्र हो जाता है तथा अल्लाह तआला की चौखट पर गिर कर ऐसा लीन होता है कि पिघलने लगता है।

अल्लाह तआला हमें नमाज़ों का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे। हम अपनी नस्लों को ऐसी इबादत की आदत डालने वाले बनें जो उनकी और आने वाली पीढ़ियों की स्थिरता की गारंटी बन जाएँ। दज्जाल ने इस ज़माने में नष्ट होना है, यह अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलै. से वादा है। यह हमारा सौभाग्य होगा कि यदि हम उन लोगों में शामिल हो जाएँ जो हज़रत मसीह मौऊद अलै की जमाअत में शामिल होने का हक़ अदा करने वाले हैं। यह हक़ अदा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने एक नुस्ख़ा रोने धोने तथा गिड़गिड़ाने को भी बयान फ़रमाया है। यह स्थान पाने के लिए आप अलै. फ़रमाते हैं- चाहिए कि तुम्हारे दिन और रात अर्थात कोई घड़ी दुआओं से ख़ाली न हो, अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला उन्हें दुष्टों एवं विरोधियों के उपद्रव से सुरक्षित रखे। स्वयं पाकिस्तान में रहने वाले अहमदी भी अपने लिए दुआ करें, तीन चार दिन अथवा सप्ताह की दुआएँ नहीं बल्कि निरन्तर दुआएँ करें। अपने जीवनों को ख़ुदा तआला के आदेशानुसार ढालने का संकल्प करें। बर्कीना फ़ासो, बंगला देश, अलजज़ायर तथा विश्व के प्रत्येक देश के अहमदियों के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला हर अहमदी को दुशमन के उपद्रव से बचाए। अल्लाह तआला हमें अपने अन्दर पाक बदलाव पैदा करने तथा दुआएँ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और फिर इन दुआओं को क़ुबूल भी फ़रमाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131